

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

चूरू

Rashtradoot

फोन:- 256906, 256907, फैक्स:- 01562-256908

वर्ष: 17 संख्या: 235

प्रभात

चूरू, सोमवार 22 दिसम्बर, 2025

पो. रजि. न. चूरू/084/2019-21

पृष्ठ 6

मूल्य 2.50 रु.

‘संघ हिंदुओं की सुरक्षा के लिए काम करता है पर मुस्लिम विरोधी नहीं है’

सरसंघचालक मोहन भागवत ने कहा कि संघ को भाजपा के नज़रिए से समझना गलत है

कोलकाता, 21 दिसंबर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरसंघचालक मोहन भागवत ने रविवार को कहा कि संगठन का कोई राजनीतिक एजेंडा नहीं है और इसे भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के नज़रिए से नहीं देखना चाहिए।

भागवत ने संघ के शताब्दी समारोह के हिस्से के रूप में कोलकाता में आरएसएस 1०० व्याख्यान माला कार्यक्रम को संबोधित करते हुए, कहा कि आरएसएस को संकीर्ण या तुलनात्मक ढाँचों से नहीं समझा जाना चाहिए। उन्होंने कहा, “अगर आप संघ को समझना चाहते हैं, तो इसका अनुभव करना पड़ेगा। तुलना करने से गलतफहमी होगी। अगर आप संघ को सिर्फ एक और सेवा संगठन मानते हैं, तो आप गलत है।”

भागवत ने कहा, “बहुत से लोगों की प्रवृत्ति संघ को भाजपा के नज़रिए से समझने की होती है, जो बहुत बड़ी

- कोलकाता में आरएसएस के शताब्दी समारोह में व्याख्यान देते हुए भागवत ने कहा कि संघ का मुख्य उद्देश्य नैतिक रूप से ईमानदार और गुणी व्यक्तियों का निर्माण करना है, जो सेवा, मूल्यों व राष्ट्रीय गौरव से प्रेरित हों व देश के विकास में योगदान दें।

गलती है।” उन्होंने कहा कि हालांकि भाजपा के कई नेताओं की जड़ें आरएसएस में हो सकती हैं, लेकिन दोनों अलग-अलग भूमिकाओं वाले अलग-अलग संगठन हैं। बाद में कोलकाता के साईंस सिटी ऑडिटोरियम में एक अन्य कार्यक्रम में बोलते हुए उन्होंने कहा कि आरएसएस राजनीति नहीं करता है और उसका कोई दुश्मन नहीं है।

उन्होंने कहा कि यह संगठन पूरी तरह से हिंदू समाज की भलाई, सुरक्षा और एकता के लिए काम करता है। उन्होंने कहा, “संघ को अक्सर गलत समझा जाता है। बहुत से लोग इसका नाम जानते हैं लेकिन इसके काम को

नहीं समझते। आरएसएस दुश्मनी या टकराव की मानसिकता से काम नहीं करता।” संघ प्रमुख ने कहा कि आरएसएस का मुख्य उद्देश्य सच्जन यानी नैतिक रूप से ईमानदार और गुणी व्यक्तियों का निर्माण करना है जो सेवा, मूल्यों और राष्ट्रीय गौरव से प्रेरित हों और जो देश के विकास में योगदान दें।

भागवत ने कहा कि संगठन के विकास से कुछ लोगों के हिंत्ों पर असर पड़ सकता है, जिससे विरोध हो सकता है, लेकिन संघ खुद किसी को दुश्मन नहीं मानता। आरएसएस के मुस्लिम विरोधी होने के आरोपों को खारिज करते हुए भागवत ने कहा कि ऐसी धारणाएं

तथ्यों के बजाय कहानियों पर आधारित हैं। उन्होंने कहा कि संघ का काम पारदर्शी है और कोई भी इसे देख सकता है। उन्होंने कहा, “जो लोग आए हैं और हमारे काम को देखा है, उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला है कि हम कट्टर राष्ट्रवादी हैं जो हिंदुओं को सुरक्षा के लिए काम करते हैं लेकिन मुस्लिम विरोधी नहीं हैं।” उन्होंने आलोचकों से संगठन का दौरा करने और इसे सीधे समझने का आग्रह किया।

इस दौरान उन्होंने हिंदू समुदाय के अंदर ज़्यादा एकता और भूली हुई सांस्कृतिक तथा सामाजिक जड़ों की ओर लौटने का आ न किया। बंगाल की विरासत का ज़िक्र करते हुए भागवत ने स्वामी विवेकानंद, राजा राम मोहन रॉय और नेताजी सुभाष चंद्र बोस जैसी हस्तियों को याद किया। उन्होंने सामाजिक सुधार में उनकी भूमिका के लिए राजा राम मोहन रॉय की खास तौर (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

महाराष्ट्र निकाय चुनाव में महायुति की विजय

मुंबई, 21 दिसंबर। महाराष्ट्र में आए 288 नगर परिषदों और नगर पंचायतों के परिणामों ने महायुति को राज्य की अविवादित शक्ति बना दिया है। कुल 288 निकायों में से महायुति ने 215 पर कब्जा किया है, जिसमें भाजपा 129, एकनाथ शिंदे की शिवसेना 51

- कुल 288 निकायों में से भाजपा ने 129, एकनाथ शिंदे ने 51 तथा अजित पवार ने 35 पर विजय प्राप्त की।

और अजित पवार की एनसीपी 35 निकायों के साथ अग्रणी हैं। इसके विपरीत, माा विकास अघाड़ी (एमवीए) मात्र 51 निकायों पर सिमट गई है, जिसमें कांग्रेस (35) ने उड़ब सेना (9) और शरद पवार की एनसीपी (7) की तुलना में बेहतर प्रदर्शन किया है।

कांग्रेस और उड़ब ठाकरे की शिवसेना (यूबीटी) ने अपनी हार (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सुप्रीम कोर्ट की परिभाषा से अरावली का 9० प्रतिशत हिस्सा सुरक्षित क्षेत्र में आयेगा- भूपेंद्र यादव

पिछले दिनों से बड़े स्तर पर चर्चा है कि परिभाषा बदलने से बड़े पैमाने पर खनन की अनुमति दी जा सकेगी

- केन्द्र सरकार ने कहा कि अरावली के लिए असली खतरा अवैध व अनियंत्रित खनन है। इसे रोकने के लिए कड़ी निगरानी, प्रवर्तन तथा ड्रोन जैसी तकनीक के इस्तेमाल की सिफारिश की है।

०.19 प्रतिशत। दिल्ली में खनन की अनुमति नहीं है। केंद्र ने बताया कि अरावली के लिए असली खतरा अवैध और अनियंत्रित खनन है। इसे रोकने के लिए समिति ने कड़ी निगरानी, प्रवर्तन और ड्रोन जैसी तकनीक का इस्तेमाल करने की सिफारिश की है। सुप्रीम कोर्ट ने मई 2०24 में एक समिति बनाई थी, जिसमें राजस्थान,

राष्ट्रपति ने वीबी-जी राम जी विधेयक को मंजूरी दी

नयी दिल्ली, 21 दिसंबर। राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू ने रविवार को ग्रामीण रोज़गार नीति में एक महत्वपूर्ण बदलाव वाले विकसित भारत-रोज़गार और आजीविका के लिए गारंटी मिशन (ग्रामीण) : वीबी-जी राम जी विधेयक 2०25 को अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी। यह अधिनियम ग्रामीण परिवारों के लिए प्रति वित्तीय वर्ष मज़दूरी रोज़गार

- यह अधिनियम प्रत्येक वित्तीय वर्ष में प्रत्येक ग्रामीण परिवार को कम से कम 125 दिनों के मजदूरी रोज़गार की गारंटी प्रदान करता है, बशर्ते परिवार के वयस्क सदस्य अकुशल शारीरिक कार्य करने के इच्छुक हों।

की वैधानिक गारंटी को 125 दिनों तक बढ़ा ता है और सशक्तिकरण, समावेशी विकास, योजनाओं के अधिसरण (कन्वर्जेंस) तथा परिपूर्ण तरीके से सेवा-प्रदाय को आगे बढ़ाने का प्रयास करता है, जिससे समृद्ध, सक्षम और आत्मनिर्भर ग्रामीण भारत को नींव मजबूत होगी। (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भारतीय सांख्यिकी संस्थान पर आरएसएस का प्रभाव बढ़ा- राहुल गांधी

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि शिक्षा संस्थान विचारधारा से नहीं ज्ञान-विज्ञान से चलने चाहिए

नई दिल्ली, 21 दिसंबर। कांग्रेस सांसद और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने भारतीय सांख्यिकी संस्थान (आईएसआई) को लेकर गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने कहा कि देश के प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान भारतीय सांख्यिकी संस्थान (आईएसआई) पर धीरे-धीरे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) का संस्थागत प्रभाव बढ़ रहा है। उनका कहना था कि शिक्षा संस्थान किसी विचारधारा से नहीं, बल्कि ज्ञान और विज्ञान से चलने चाहिए। राहुल गांधी ने संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान आईएसआई के छात्रों से हुई मुलाकात का एक वीडियो अपने वाट्सऐप पर साझा किया।

ज्ञातव्य है कि यह बातचीत संसद परिसर में उनके ‘जन संसद’ कार्यक्रम के तहत हुई थी, जिसमें वे अलग-अलग वर्ग के लोगों से मिलते हैं। राहुल गांधी ने बताया कि आईएसआई के छात्रों ने वही चिंताएं जताईं, जो देश के दूसरे

गया जी, 21 दिसंबर। पूर्व बिहार मुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी ने रविवार को कहा कि उन्हें एनडीए में अनुचित व्यवहार का सामना करना पड़ा है। उन्होंने संकेत दिया कि यदि उनकी पार्टी, हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा (हम) को आगामी राज्यसभा चुनावों में सीट नहीं दी जाती है, तो उन्हें अपनी राजनीतिक रणनीति पर पुनर्विचार करना पड़ सकता है।

पूर्व मुख्यमंत्री ने यह टिप्पणी अपने गयाजी संसदीय क्षेत्र में पार्टी के एक कार्यक्रम में बोलते हुए की। इसके बाद उन्होंने पत्रकारों के सवालों का भी जवाब दिया। मांझी अपने पुत्र संतोष कुमार सुमन, जो हम के राज्य मंत्री और राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं, के साथ उपस्थित थे। मांझी ने गठबंधन में अपने साथ हुए कथित “विश्वासघात” का जिक्र करते हुए स्थानीय भाषा मगही में कहा, “अगर हमें हमारा हक नहीं मिला तो हमें अपनी राह खुद बनानी होगी। मेरा अपना मंत्री पद कोई बड़ी बात नहीं है। अगर मैं केंद्रीय कैबिनेट में नहीं भी रहूँ तो भी मैं राजनीतिक रूप से टिक जाऊंगा।” उन्होंने स्पष्ट किया कि उनकी पार्टी, जिसका संसद में केवल एक संसद है, अब राज्यसभा में भी सीट चाहती है। हालांकि, जब पत्रकारों ने उनसे और सवाल किए, तो मांझी ने अपनी बिशिष्ट शैली में पलटी लेते हुए कहा, “कृपया मेरे शब्दों को संदर्भ से

- पूर्व मुख्यमंत्री जीतनराम मांझी ने कहा, “अगर हमें हमारा हक नहीं मिला तो हमें अपनी राह खुद बनानी होगी।”

बाहर न पेश करें। मैं अपनी पार्टी का निर्णय नहीं ले सकता क्योंकि मैं उसका कार्यालय (संश्लक्ष) हूँ।”

‘बाँग्लादेश उच्चायोग सुरक्षित, बाँग्लादेशी मीडिया दुष्प्रचार से बचे’

नई दिल्ली, 21 दिसंबर। विदेश मंत्रालय ने यहां स्थित बाँग्लादेश उच्चायोग की सुरक्षा के बारे में बाँग्लादेशी मीडिया में किए जा रहे दुष्प्रचार पर कड़ी आपत्ति जताते हुए कहा है कि उच्चायोग की सुरक्षा की स्थिति खराब करने की कोई कोशिश नहीं की गई है और लोगों को गुमराह नहीं किया जाना चाहिए।

विदेश मंत्रालय के आधिकारिक प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने यहां स्थित बाँग्लादेश उच्चायोग के सामने शनिवार को हुए प्रदर्शन के बारे में मीडिया के सवालों के जवाब में रविवार को कहा कि भारत विएना कन्वेंशन के अनुसार अपने क्षेत्र में विदेशी मिशनों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि बाँग्लादेशी मीडिया

- विदेश मंत्रालय ने कहा कि लोगों को गुमराह नहीं किया जाना चाहिए।

इस बारे में दुष्प्रचार कर लोगों को गुमराह कर रहा है। प्रवक्ता ने कहा, ” हमने इस घटना पर बांग्लादेशी मीडिया के कुछ हिस्सों में गुमराह करने वाला दुष्प्रचार देखा है। सच यह है कि 20 दिसंबर को नई दिल्ली में बांग्लादेश हाई कमीशन के सामने लगभग 2०-25 युवा इकट्ठा हुए और उठोंने मैमनसिंह में दीपू चंद्र दास की भयानक हत्या के विरोध में नारे लगाए, साथ ही बांग्लादेश में सभी (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मनरेगा से गांधी का नाम हटाना, उनकी दूसरी हत्या है- चिदंबरम

वरिष्ठ कांग्रेस नेता चिदंबरम ने कहा कि इस विधेयक से ग्रामीण रोजगार की गारंटी कमज़ोर हो गई

नई दिल्ली, 21 दिसंबर। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम से गांधी का नाम हटाने को लेकर कांग्रेस ने केंद्र सरकार पर तीखा हमला बोला है। वरिष्ठ कांग्रेस नेता पी. चिदंबरम ने इसे महात्मा गांधी की दूसरी हत्या करार दिया है। उन्होंने कहा कि संसद से पारित नए कानून के जरिए न सिर्फ गांधी की स्मृति को मिटाने की कोशिश की गई है, बल्कि ग्रामीण गरीबों के अधिकारों पर भी सीधा प्रहार हुआ है। चिदंबरम ने कहा कि 18 दिसंबर को संसद ने विकसित भारत गारंटी फॉर रोजगार और आजीविका मिशन (ग्रामीण) यानी वीबी-जी राम जी विधेयक पारित किया, जो 2० साल पुराने मनरेगा कानून की जगह लेगा। उन्होंने आरोप लगाया कि यह बदलाव बिना पर्याप्त चर्चा के किया गया और इससे ग्रामीण रोजगार की कानूनी गारंटी कमजोर हो गई है। कांग्रेस नेता ने कहा कि पार्टी इस कानून का लगातार विरोध करेगी। हालांकि आज ही यानी रविवार को राष्ट्रपति ने इस बिल को मंजूर भी कर

दिल्ली में प्रदूषण रविवार को 400 से अधिक

नयी दिल्ली, 21 दिसंबर। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली और आसपास के इलाकों में रविवार सुबह भी वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) गंभीर श्रेणी में बना रहा। शहर के कई प्रमुख इलाकों में सुबह के समय एक्यूआई

- शनिवार को कई इलाकों में एक्यूआई 500 से अधिक हो गया था।

400 के पार दर्ज किया गया। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के आंकड़ों के अनुसार, अक्षरधाम, आईटीओ, गाजीपुर और आनंद विहार इलाकों में एक्यूआई 438 दर्ज हुआ।

बराणपुरा फ्लाईओवर पर एक्यूआई 382 और धौला कुआँ पर 397 रहा, जो दोनों बहुत खराब श्रेणी में आते हैं। शनिवार की तुलना में (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नई दिल्ली, 21 दिसंबर। दुनिया की सबसे प्राचीन पर्वत शृंखलाओं में से एक, अरावली पर्वत शृंखला इन दिनों खूब चर्चा में है। रविवार को केन्द्र सरकार ने उन रिपोर्टों को खारिज किया,जिनमें कहा गया था कि अरावली की परिभाषा बदल दी गई है ताकि बड़े पैमाने पर खनन की अनुमति दी जा सके। सरकार ने बताया कि सुप्रीम कोर्ट ने इस क्षेत्र में नए खनन लीज पर रोक लगाई हुई है। मामले में पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट की मंजूरी

ज्नातव्य है कि बीते दिनों इन पर्वतों के पास खनन की घटनाओं को लेकर सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका डाली गई। इस पर केंद्र सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय में एक जवाब दाखिल किया। इसी जवाब के बाद से देशभर में कुछ

ऐसे घटनाक्रम हुए हैं, जिन्हें लेकर अरावली शृंखला चर्चा के केंद्र में आ गई। इतना ही नहीं अरवली के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर “सेव अरावली कैपेन” यानी अरावली बचाओ अभियान चल पड़ा है।

मामले में सरकार ने साफ किया कि अरावली की परिभाषा राज्यों में प्रमाणित की गई है ताकि किसी प्रकार का गलत इस्तेमाल न हो। इससे पहले, अलग-अलग राज्य खनन की अनुमति देते समय अलग-अलग नियम अपनाते थे।सरकार के अनुसार, राजस्थान, हरियाणा और गुजरात में कानूनी खनन बहुत ही छोटे हिस्से में होता है, केवल

पाट्यक्रम और रिसर्च पर भी आरएसएस की विचारधारा थोपने की कोशिश की जा रही है।

राहुल गांधी ने आगे इसे शिक्षा सुधार नहीं, बल्कि शिक्षा और संस्थानों को कमजोर करने की साजिश बताया। राहुल गांधी का कहना है कि इससे युवाओं का भविष्य अंधकार में धकेला जा रहा है और आगे चलकर इन संस्थानों का निजीकरण या उनकी संपत्तियों को बेचने की तैयारी की जा सकती है।

राहुल गांधी ने साफ कहा कि यह हमला सिर्फ संस्थानों पर नहीं, बल्कि देश की बौद्धिक आजादी, वैज्ञानिक सोच और युवाओं के भविष्य पर है। उन्होंने दोहराया कि कांग्रेस इसे किसी

हरियाणा की सायबर क्राइम थाना टीम रिश्तत की राशि के साथ पकड़ी गई

जयपुर, 21 दिसम्बर। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एससीबी) की अजमेर टीम ने कार्रवाई करते हुए पुलिस थाना साइबर क्राइम सिरसा, हरियाणा, के उपनिरीक्षक सुरेन्द्र कुमार एवं पुलिस स्टाफ के अन्य सदस्यों को छह लाख रुपये की अवैध राशि सहित पकड़ा। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो पुलिस महानिदेशक गोविन्द गुप्ता ने बताया कि

- भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की टीम ने कुचामन सिटी में चैकिंग के दौरान हरियाणा के उपनिरीक्षक व पुलिस स्टाफ को 6 लाख रूपए की अवैध नकदी के साथ पकड़ा।

ब्यूरो में गोपनीय जानकारी प्राप्त हुई कि हरियाणा पुलिस का स्टाफ हरियाणा में दर्ज साइबर क्राइम के मुकदमे के अनुसंधान एवं आरोपियों की तलाश के लिए आया हुआ है। एवं प्रकरण में संदिग्ध लोगों को डरा धमकाकर अवैध रूप से रिश्तत राशि प्राप्त कर वाहन संख्या एचआर 24 जीवी 2222 से हरियाणा जा रहा है।

एससीबी अजमेर की अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक वंदना भाटी के नेतृत्व में तुरन्त कार्यवाही करते हुये जिला डीडवाना-कुचामन में पुलिस थाना कुचामन सिटी के क्षेत्र त्रिशिंगिया में (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

CMYK

●

●

●

●

⊕

●

●

●

●

⊕

●

●

●

●

⊕

●

●

●

●

CMYK

विचार बिन्दु

पूरे यत्न से इतिहास की रक्षा करनी चाहिए, इतिहास और अपना प्राचीन गौरव नष्ट कर देने से विनाश निश्चित है। –महाभारत

साहित्य और कृत्रिम बुद्धिमत्ता

इधर साहित्य की दुनिया में कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने बड़ी हलचल पैदा कर रखी है। बहुत सारे लेखकों और साहित्यानुरागियों को लगता है कि यह एक नई महामारी है जो कुछ समय में सब कुछ को खत्म कर देगी। लेखक के पास लिखने–करने को कुछ रहेगा नहीं और पाठक को जो भी मिलेगा वह सब कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा रचित होगा। ऐसा मानने वाले बहुत सारे लोग ऐसे हैं जिन्होंने केवल कृत्रिम बुद्धिमत्ता का नाम सुना है और जिन्हें अभी तक कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विभिन्न पक्षों को जानने समझने का मौका नहीं मिला है। आज जो प्रतिक्रिया कृत्रिम बुद्धिमत्ता को लेकर हो रही है, कुछ–कुछ वैसी ही प्रतिक्रिया कुछ दशक पहले कम्प्यूटर को लेकर भी हुई थी। लेकिन हम पाते हैं कि वे आशंकाएं अधकचरी थीं और आज स्थिति यह है कि कम्प्यूटर हमारी ज़िंदगी का ज़रूरी हिस्सा बन गया है और उसने हमें जितना नुकसान पहुंचाया है उससे ज़्यादा सुविधाएं भी हमें प्रदान की हैं। यह तो समय ही बताएगा कि क्या इतिहास अपने आप को दुहराएगा, अभी तो हम थोड़ा गहराई में जाकर यह विचार कर सकते हैं कि जितनी जानकारी अभी हमें सुलभ है उसके अनुसार कृत्रिम बुद्धि साहित्य को कैसे प्रभावित करने जा रही है। यहीं यह बात भी ध्यान में रखी जानी चाहिए कि तकनीक बहुत तेज़ी से बदल और विकसित हो रही है, इसलिए यह भविष्यवाणी करना कि कल, या अगले कुछ वर्षों में ऐसा हो जाएगा, ख़तरे से खाली नहीं है। बहुत सम्भव है कि कल तकनीक कोई और ही रूप ले ले।

अभी साहित्य से जुड़े लोग इस बात को लेकर आशंकित हैं कि भविष्य में कविता, कहानी, उपन्यास सब कुछ कृत्रिम बुद्धि रच देगी। यह आशंका एकदम तो निर्मूल नहीं है। अभी जितने साधन हमें सुलभ हैं उनके द्वारा भी ऐसा किया जाना सम्भव हो चुका है। आप कृत्रिम बुद्धि के किसी टूल को ठीक से निर्देश (कमाण्ड) दें तो पलक झपकते ही आपके सामने तदनु रूप रचित ‘चीज़’ हाज़िर हो जाएगी। आप चैटजीपीटी को कविता लिखने का आदेश दे सकते हैं और आपको कविता मिल जाएगी। आप कुछ बिंदु दें तो कहानी भी मिल सकती है, और कदाचित् उपन्यास भी। अब अगर मैं इस तरह से कुछ रच कर अपने नाम से प्रकाशित करवा लूँ तो? मैं तो बगीर रचनात्मक प्रतिभा के रचनाकार बन जाऊँगा। क्या पता उस निर्मित को कोई पुरस्कार भी मिल जाए! वह रचना मेरी नहीं है, यह दावा कौन करेगा? कृत्रिम बुद्धि तो दावा करने आएगी नहीं! इसे नैतिक प्रश्न भी मान सकते हैं! अभी तो कॉपीराइट कानून में भी इस समस्या का कोई समाधान नहीं है, क्योंकि कानून पहले बना था, समस्या बाद में उत्पन्न हुई है। यह भी सोचिये कि पहले जिस तरह बहुत सारे प्रकाशक छ्थ लेखन करवाते थे क्या वैसे ही अब बहुत सारे प्रकाशक कृत्रिम लेखन नहीं करवाने लग जाएंगे? अख़बार और पत्र पत्रिकाओं के संपादक भी लेखक पर निर्भर रहने की बजाय ‘आत्म निर्भर’ नहीं हो जाएंगे? इसका अँसर जहां लेखकों की आजीविका, उनकी महत्ता और उनकी रचनात्मकता पर पड़ेगा, वहीं वे लोग जो साहित्य से वैचारिक ऊर्जा टाहरण करते हैं, उनकी भी तो हानि होगी।

लेकिन ये सब तो नकारात्मक बातें हैं। क्या कृत्रिम बुद्धि से साहित्य का और साहित्यकारों का कोई भला नहीं होगा? कल्पना कीजिए कि आप एक उपन्यास लिखना चाहते हैं। एक स्थूल–सी रूपरेखा आपके मन में है। आप उसी रूपरेखा को विकसित करके एक उपन्यास बनाना चाहते हैं और इसके लिए कृत्रिम बुद्धि से मदद मांगते हैं। आपको कुछ बिंदु सुझा दिए जाते हैं। आप उन्हें विकसित करके कथा का रूप देते हैं। आपका श्रम कुछ कम हो गया है और इसका

अब से कुछ बरस पहले मशीनी अनुवाद हम सबके लिए हास्य और उपहास का विषय हुआ करता था, क्योंकि मशीन से हासिल किए गए अनुवाद अटपटे और ख़ासे मनोरंजक होते थे। लेकिन अब ऐसा नहीं है। अब मशीनी अनुवाद लगभग निर्दोष होते हैं। रोज़मर्रा के काम की अभिव्यक्तियां बहुत अच्छी तरह से एक से दूसरी भाषा में रूपांतरित हो जाती हैं। बेशक मनुष्य अभी भी उत्कृष्ट है, लेकिन अब मशीनी अनुवाद भी निकृष्ट नहीं रह गया है। तो इसी तरह सर्जनात्मकता के क्षेत्र में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता विकास करेगी, यह माना जा सकता है।

शायद हममें से बहुतों को इस बात की जानकारी नहीं है कि ये पंक्तियां लिखते समय भी हमारी अपनी भाषा में ऐसे अनेक टूल सुलभ हो गए हैं जो साहित्य सृजन में मददगार हैं। उदाहरणार्थ एक टूल है शायर एआई जिसे हिंदी कविताओं के डेटाबेस पर तैयार किया गया है और इसकी मदद लेकर आप पारंपरिक हिंदी–उर्दू शैली में शेर वगैरह तैयार कर सकते हैं। इसी का एक और रूप हिंदी शायरी जनरेशन मॉडल्स भी है जो पारंपरिक शैली की ग़ज़ल तैयार कर सकता है। इसी तरह एक टूल है एआईपोयम जनरेटर जहां आप कोई विषय देकर कविता लिखवा सकते हैं। आप कहें कि मुझे प्रेम पर कविता चाहिए, तो यह टूल आपको एक भावनात्मक कविता बनाकर दे देगा। उसमें आप कोई सुधार चाहेंगे तो यह सुधार भी कर देगा। इससे यह न समझ लें कि एआई केवल कविता और शायरी ही कर सकता है, राइट क्रीम्स स्टोरी जनरेटर बच्चों के लिए ऐसी कहानी तैयार करके दे देता है जो सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और नैतिकता का संदेश देने वाली हो। पैराफ़ेस टूल का शॉर्ट स्टोरी जनरेटर भी छोटी कहानियां तैयार कर देता है। जानकारों का कहना है कि बहुत सारे लेखक, जो तकनीक के मामले में अग्रगामी हैं, चैटजीपीटी, जेम्परएआई या ग़ोक की मदद लेकर कभी कहानी का प्लॉट प्राप्त कर रहे हैं या कभी उसका विकास कर रहे हैं या कभी अपने लिखे को परिष्कृत कर रहे हैं। अनुवाद के मामले में तो एआई की मदद अब सर्व स्वीकार्य है।

निश्चय ही अभी कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिंदी में काम करने में उतनी दक्ष नहीं है जितनी दक्ष वह अंग्रेज़ी या कुछ अन्य भाषाओं में काम करने में है। इसलिए स्वभावतः हम हिंदी वाले उससे अधिक लाभ नहीं ले पा रहे हैं। यह बताने की ज़रूरत नहीं कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता को भी बाकायदा प्रशिक्षित किया जाता है। मज़ाक में कहूँ तो यह कि अभी उसने हिंदी ठीक से सीखी नहीं है। लेकिन अगर हम चाहेंगे तो वह जल्दी ही सीख जाएगा। इस बात का बहुत बड़िया उदाहरण अनुवाद की दुनिया से दिया जा सकता है, अब से कुछ बरस पहले मशीनी अनुवाद हम सबके लिए हास्य और उपहास का विषय हुआ करता था, क्योंकि मशीन से हासिल किए गए अनुवाद अटपटे और ख़ासे मनोरंजक होते थे। लेकिन अब ऐसा नहीं है। अब मशीनी अनुवाद लगभग निदोष होते हैं। रोज़मर्रा के काम की अभिव्यक्तियां बहुत अच्छी तरह से एक से दूसरी भाषा में रूपांतरित हो जाती हैं। बेशक मनुष्य अभी भी उत्कृष्ट है, लेकिन अब मशीनी अनुवाद भी निकृष्ट नहीं रह गया है। तो इसी तरह सर्जनात्मकता के क्षेत्र में भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता विकास करेगी, यह माना जा सकता है।

मेरा सोच तो यह है कि हमें अनावश्यक और अतार्किक आशंकाओं से बचना चाहिए। तकनीक का विकास हमेशा ही नुकसानदायक नहीं होता है। और सारी बात का सार तो यह है कि आप उसे कैसे बरतते हैं! आप उससे सहायता लेते हैं और उस प्राप्त सहायता को अपनी बुद्धि के स्पर्श से परिष्कृत करते हैं तो यह बहुत अच्छी बात है। लेकिन अगर आप एकदम निटल्ले हो जाएं और सब कुछ कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर ही छोड़ दें तो ऐसा करना आपकी ग़लती होगा और इसके लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता को दोष नहीं दिया जाना चाहिए। जैसा मैंने प्रारम्भ में कहा, तकनीक बहुत तेज़ी से परिवर्तित और विकसित हो रही है, अतः आने वाला समय ही बताएगा कि वह क्या रूप लेती है।

—अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)



डॉ. राजेन्त्र प्रसाद शर्मा

भले ही यह दावा किया जाता है कि दवाओं की जांच के लिए जो संपल लिए जाते हैं उनमें से केवल 3 प्रतिशत दवाएं निर्धारित मानकों पर खरी नहीं उतरती पर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि दवा के एक भी नमूने में निर्धारित मात्रा व संयोजन में कंपाैन्ट नहीं है तो यह स्वीकार नहीं होनी चाहिए। पिछले कुछ माहों के समाचारों का ही विश्लेषण किये जाये तो मध्यप्रदेश राजसधान सहित देश के कई हिस्सों में खांसी की दवा के चलते बच्चों की जान ना केवल सांसत में आई बल्कि कुछ बच्चों को तो जिंदगी से हाथ धोना पड़ा। हालांकि लौपापोती के नाम पर यह सफाई दी गई कि दवा डाक्टर ने नहीं

लिखी थी या चिकित्सालय से दवा नहीं दी गई थी। सवाल यह है कि अमानक दवाएं तैयार कर जीवन से खिलवाड़ करने वालों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई नहीं होना उनके हौसले को ही बढ़ाती है। माना जाता है कि नकली पेस्टीसाइड बनाने व बेचने वालों के लिए सख्त सजा का प्रावधान है तो फिर दवाओं के संपल फेल हो जाने पर उस बेच की दवाओं को बाजार से हटाने की बात तो कर दी जाती है पर किसी दवा निर्माता को दवाओं के संपल विफल होने पर सजा मिलने के समाचार लगभग दिखाई ही नहीं देते।

गत पांच सालों में 14 हजार से अधिक दवाओं के संपल विफल हुए हैं। मजे की बात यह है कि इनमें से अधिकांश बुखार, खांसी के साथ ही ब्लड प्रेशर, शुगर जैसी गंभीर बीमारी के भी हैं। अब कल्पना की जा सकती है कि बीपी या शुगर के बीमार पर अमानक दवाओं का क्या असर होता होगा या हो सकता है। सामान्य से गंभीर बीमारी की दवाओं के संपल विफल होना इस बात का साफ संकेत है कि दवा निर्माताओं में ना तो मरीजों के प्रति गंभीरता है और ना ही किसी कानूनी कार्रवाई का डर। यह तो वह आंकड़े हैं जो सामने आ जाते हैं नहीं तो बाजार में आने वाली दवाओं के सभी के सभी बैच के संपल जांच के लिए लेना या जांच करना संभव भी

नहीं तो व्यावहारिक भी नहीं लगता। ऐसे में अमानक पाये जाने पर कठोर कार्रवाई लोगों की जिंदगी से खिलवाड़ करने वालों में भय व सबक सीखा सकती है।

दवाओं के निर्धारित मानकों पर खरी नहीं उतरने के साथ ही जीवनदायिनी दवाओं के तेजी से बेअसर होना एक समस्या होती जा रही है। इसका एक बड़ा कारण जहां एंटीबायोटिक दवाओं का अत्यधिक उपयोग स्वास्थ्य को नुकसान ही पहुंचाने लगा है तो दूसरी ओर बैक्टीरिया में प्रतिरोधी क्षमता विकसित होने से दवाओं का असर कम होने लगा है।

दवाओं के तेजी से बेअसर होने को लेकर देश–दुनिया के स्वास्थ्य विशेषज्ञ अत्यधिक चिंता में हैं। मेडिकल से जुड़े जर्नल द लैसैंट में इस संबंध में एक के बाद एक चेतावनी भरे लेख सामने आ रहे हैं। यहां तक कि एएमआर को मेडिकल इमर्जेंसी के रूप में देखा जाने लगा है। दरअसल कोरोना के बाद लोग थोड़ा सा स्वास्थ्य खराब होते ही डॉक्टर की शरण में जाने को वरियता देने लगे हैं। यह अच्छी बात भी है पर जिस तरह से कोरोना के दौरान और उसके बाद एंटीबायोटिक का उपयोग अधिक बढ़ा है वह चिंतनीय हो गया है। हालात यहां तक हो गए हैं कि प्रति व्यक्ति 30 प्रतिशत अधिक मात्रा में एंटीबायोटिक का उपयोग होने लगा

एंटीबायोटिक दवाओं को ईलाज में शामिल किया जा रहा है। यह 95 प्रतिशत का आंकड़ा अतिशयोक्ति पूर्ण भले ही हो सकता है पर इसमें कोई दो राय नहीं कि चिकित्सकों द्वारा एंटीबायोटिक दवाएं धड़ल्ले से लिखी जा रहा है। यह तो तब है जब मेडिकल से जुड़े विभिन्न मंचों व शोध निष्कर्षों में यह खुलासा हो चुका है कि एंटीबायोटिक दवाओं का अत्यधिक उपयोग स्वास्थ्य को नुकसान ही पहुंचाने लगा है तो दूसरी ओर बैक्टीरिया में प्रतिरोधी क्षमता विकसित होने से दवाओं का असर कम होने लगा है।

दवाओं के तेजी से बेअसर होने को लेकर देश–दुनिया के स्वास्थ्य विशेषज्ञ अत्यधिक चिंता में हैं। मेडिकल से जुड़े जर्नल द लैसैंट में इस संबंध में एक के बाद एक चेतावनी भरे लेख सामने आ रहे हैं। यहां तक कि एएमआर को मेडिकल इमर्जेंसी के रूप में देखा जाने लगा है। दरअसल कोरोना के बाद लोग थोड़ा सा स्वास्थ्य खराब होते ही डॉक्टर की शरण में जाने को वरियता देने लगे हैं। यह अच्छी बात भी है पर जिस तरह से कोरोना के दौरान और उसके बाद एंटीबायोटिक का उपयोग अधिक बढ़ा है वह चिंतनीय हो गया है। हालात यहां तक हो गए हैं कि प्रति व्यक्ति 30 प्रतिशत अधिक मात्रा में एंटीबायोटिक का उपयोग होने लगा

है। दवाओं का बेअसर होने का सीधा सीधा असर किडनी, लीवर, ब्रैन, हार्ट आदि प्रभावित होने लगे हैं। इन गंभीर बीमारियों में एंटीबायोटिक दवाओं का असर कम होने लगा है।

इसे सकारात्मक ही माना जाएगा कि आज लोग स्वास्थ्य के प्रति अधिक सजग हुए हैं। जरा सा स्वास्थ्य गड़बड़ाने लगते ही लोग दवाओं का सहारा लेना आरंभ कर देते हैं। ऐसे में दवाओं की गुणवत्ता और मानकों पर खरी होना अधिक आवश्यक हो जाता है। दूसरी ओर अत्यधिक एंटीबायोटिक लिखने और सेवन को भी नियंत्रित किया जाना ज़रूरी हो जाता है। ऐसा नहीं है कि सरकार इन हालातों से अनजान है बल्कि सरकार गंभीर प्रयास करने के साथ ही सख्त कानूनी प्रावधानों की दिशा में बढ़ रही है। दवाओं के पैकिंग पर असली नकली की पहचान के लिए क्युआर कोड लगाने जैसी कदम उठा रही है पर निर्धारित मात्राओं पर खरी नहीं उतरने वाले बैच की दवाओं को उपयोग से बाहर करने के सीमित कदम के स्थान पर निर्माता पर सख्त से सख्त कार्रवाई के प्रावधान होने ही चाहिए। ऐसे मामलों में न्यायालयों को भी सख्ती का संदेश देना चाहिए ताकि किसी को अनजाने में किसी की गलती से जीवन से हाथ नहीं धोना पड़े।

डॉ. राजेन्त्र प्रसाद शर्मा,
(वरिष्ठ लेखक)

जलवायु परिवर्तन से उपजे संकट जब मौसम बदलता है, तो पूरा गांव बदल जाता है



मणिमाला शर्मा

राजस्थान में जलवायु परिवर्तन अब सिर्फ मौसम विभाग की रिपोर्ट का विषय नहीं रहा, यह ठामीण जीवन की हकीकत बन चुका है। पिछले कुछ वर्षों में राज्य में वर्षा का कुल स्तर थोड़ा बढ़ा है, लेकिन उसका वितरण पूरी तरह असंतुलित हो गया है। मानसून के कुछ ही दिनों में पूरे सीजन जितनी बारिश गिर जाना और फिर लंबे सूखे दौर का सामना करना अब आम बात बन चुकी है। इसी कारण राजस्थान के कई जिलों को एक

ही वर्ष में बाढ़ और सूखे दोनों का सामना करना पड़ रहा है। आंकड़े बताते हैं कि पिछले दशक में औसत तापमान में स्पष्ट वृद्धि हुई है। विशेषकर जून–जुलाई के महीनों में हीटवेव के दिन बढ़ गए हैं। इसका असर खेतों में काम करने के घंटों, फसलों की वृद्धि और पशुओं की सेहत पर साफ दिखाई दे रहा है। पशुपालन विभाग के आंकड़ों के अनुसार, बढ़ती गर्मी और चारे की कमी के कारण कई इलाकों में दूध उत्पादन में 15 से 20 प्रतिशत तक कमी आई है। प्रदेश की भूजल रिपोर्टें भी दर्शाती हैं कि राजस्थान के लगभग 85 प्रतिशत भूजल ब्लॉक अत्यधिक दोहन की श्रेणी में आ चुके हैं। यानी बारिश होने के बावजूद पानी की स्थायी उपलब्धता अब गंभीर चुनौती बन गई है।

गांवों की जमीनी तस्वीर और भी चिंताजनक है। नाथूबर (चूरू), पिपलोटी (झालावाड़), सांचौर और चित्तलवाना (पश्चिमी राजस्थान) जैसे गांवों में किसान अब अपने अनुभव और परंपरागत ज्ञान पर भरोसा नहीं कर सकते। लालचंद पूनिया (नाथूबर) कहते हैं, पहले सावन में बारिश तय

रहती थी, अब कब बरस पड़े और कब गायब हो जाए, कोई भरोसा नहीं। खेती अब किस्मत पर चल रही है। रामकुमार नागर (पिपलोटी) बताते हैं, सात–आठ साल में पहली बार इतना नुकसान देखा। या तो बारिश बंद रहती है या पूरे सीजन जितना पानी एक ही बार में गिर जाता है। पवनसिंह देवड़ा (सांचौर) कहते हैं, पहले आकाश देखकर अंदाजा लगा लेते थे, अब मौसम अचानक बदल जाता है। फसल कितनी बचेगी, पता नहीं।

खेती के संकट के साथ–साथ पशुपालन भी गहरी चुनौती बन चुका है। नागौर, बाड़मेर और चूरू में घास की कमी, अनियमित बारिश और तेज गर्मी ने पशुओं की सेहत प्रभावित की है। दूध उत्पादन घटा है और कई छोटे पशुपालक अपने पशुओं की संख्या कम करने को मजबूर हो गए हैं। मदनलाल नाई (तनगढ़, चूरू) बताते हैं, पहले चारागाह हरे रहते थे। अब बारिश कम या अचानक ज्यादा होने से घास ठीक से नहीं उगती। बाहर से चारा खरीदना पड़ता है। इससे लागत बढ़ रही है और आमदानी घट रही है।

इस बार राजस्थान के दक्षिणी जिलों, जैसे उदयपुर और गोंगड़, में

बारिश अच्छी हुई है, लेकिन तेज बारिश और मिट्टी कटाव ने चरागाहों और छोटे तालाबों पर प्रभावित किया है। इसका असर पशुपालन और मवेशियों की संख्या पर साफ दिखाई दे रहा है। किसानों का कहना है कि यह असमान वितरण उनकी आर्थिक सुरक्षा को डगमगा रहा है।

जलवायु परिवर्तन का सबसे बड़ा, लेकिन अदृश्य असर महिलाओं पर पड़ रहा है। राज्य में पौने के पानी की समस्या पहले से ही सघनवह है। ऐसे में बाड़मेर, जैसलमेर और टोंक में महिलाएं पहले से ज़्यादा दूरी तय कर पानी ला रही हैं। पशुधन के चारे की दिक्कत और रोजगार की कमी ने पुरुषों का पलायन बढ़ा दिया है। इसके कारण खेत और घर दोनों की जिम्मेदारी महिलाओं पर आ गई है। कमला देवी (उनियारा, टोंक) कहती हैं, पहले एक चक्कर में पानी मिल जाता था। अब दो–तीन बार जाना पड़ता है। गर्मी बढ़ने से यह काम और मुश्किल हो गया है।

बार–बार खराब होती फसलें, बढ़ती लागत और घटती पैदावार ने किसानों को कर्ज और मानसिक दबाव के दायरे में ला दिया है। झालावाड़ और कोटा के किसान बताते हैं कि एक खराब

सीजन अगले साल को संभालना मुश्किल बना देता है। हेमराज मीणा (झालावाड़) कहते हैं, कर्ज पहले भी था, लेकिन अब डर बढ़ गया है। मौसम कब साथ छोड़ दे, कोई नहीं जानता।

राजस्थान में पानी की स्थिति समय के साथ और अधिक गंभीर होती जा रही है। कई जिलों में अच्छी बारिश के बावजूद भूजल स्तर में स्थायी सुधार नहीं हो पा रहा है। तालाब, जोहड़ और पारंपरिक जल संचयन के प्रयास भी सफल नहीं हो रहे हैं। इसका असर सीधे गांव की महिलाओं और बच्चों पर पड़ता है। स्थानीय स्तर पर कुछ पंचायतें तालाब, जोहड़ और चेक डैम बनाकर जल संचयन कर रही हैं। रेवावट हार्वेस्टिंग, ड्रिप सिंचाई और फसल निविधीकरण के प्रयास भी शुरू हो रहे हैं। फिर भी योजनाओं का लाभ सीमित है।

राजस्थान का ग्रामीण परिदृश्य साफ संकेत देता है कि जलवायु परिवर्तन अब भविष्य की चेतावनी नहीं, बल्कि वर्तमान का संकट है। मौसम बदल चुका है। अब हमारी सोच, नीति और तैयारी को भी उसी के अनुसार बदलना होगा।

—मणिमाला शर्मा,
वरिष्ठ पत्रकार

अच्छा साहित्य समाज में पथ प्रदर्शक की भूमिका निभाता है : राज्यपाल हरिभाऊ बागडे

बीकानेर, (निर्स)। पीएमश्री अशोक शर्मा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, लालसोट में आयोजित अखिल भारतीय साहित्यकार सम्मान समारोह की संवोधित करते हुए राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने कहा कि अच्छा साहित्य समाज में पथ प्रदर्शक की भूमिका निभाता है और विद्रूपताओं को मिटाता है। साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है, जो समाज को नई दिशा एवं सोच देता है। यह समाज को सोचने पर मजबूर करता है। उन्होंने

■ **अखिल भारतीय साहित्यकार सम्मान समारोह में साहित्यकार रवि पुरोहित को राज्यपाल बागडे ने सम्मानित किया**

साहित्य के भाव को स्पष्ट करते हुए कहा कि साहित्य में सबका हित निहित होता है। इसका मूल तत्व सबका हित साधना है। उन्होंने कबीर एवं रहीम के साहित्य के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से समाज सुधारने का संदेश दिया, जो रूढ़ियों एवं बुराईयों का

प्रतिकार करता है। उन्होंने मैथिली शरण गुप्त एवं वाल्मीकि की ओर से साहित्य के माध्यम से समाज को दिए योगदान का भी जिक्र किया।

उन्होंने कहा कि देश की आजादी से पहले विदेशियों ने हमारे देश का काफी झूठा इतिहास भी लिखा है, जिसे सुधारने की ज़रूरत है। उन्होंने इसे

आधुनिक साहित्यकारों की जिम्मेदारी बताते हुए कहा कि आप ऐसे विकृत इतिहास को खोजें और सुधारें। इससे पूर्व राज्यपाल हरिभाऊ बागडे एवं अन्य अतिथियों ने अनुाग सेवा संस्थान के 31 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित अखिल भारतीय अनुाग साहित्य अलंकरण समारोह में बीकानेर के साहित्यकार रवि पुरोहित को उनकी काव्य कृति ‘आग अभी शेष है’ के लिए शकुंतला देवी रावत स्मृति अनुाग साहित्य सम्मान सहित विभिन्न राज्यी से

चयनित 31 साहित्यकारों को शॉल, सम्मान पत्र, स्मृति चिह्न एवं सम्मान राशि प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर रवि पुरोहित ने कहा कि पुरस्कार व सम्मान साहित्यकार की सामाजिक जिम्मेदारी का विस्तार करते हैं। साहित्य मनुष्य को केवल मनोरंजन नहीं देता, यह मानसिक व बौद्धिक विकास का पूरा बीज और विद्रूप के प्रतिकार हेतु चेनना का अमोघ अस्त्र सीपाता है। संवेदना का विकास नव समाज के निर्माण में साहित्य की सबसे बड़ी देन है।

शिविर में वर्षों पुरानी समस्या सुलझी

सीकर, (निर्स)। ग्राम पंचायत मुख्यालय शाहपुरा, तहसील धोद में आयोजित ग्रामीण समस्या समाधान शिविर-2025 ग्रामीणों के लिए आशा और राहत की किरण बनकर सामने आया। वर्षों से चली आ रही एक गंभीर समस्या, जो रोज़मर्रा के जीवन को प्रभावित कर रही थी, उसका समाधान इस शिविर में कुछ ही मिनटों में हो गया। ग्राम शाहपुरा के लगभग 25–

■ **रास्ता लंबे समय से प्रचलन में था, लेकिन राजस्व रिकॉर्ड में कटान दर्ज नहीं होने से ग्रामीणों को आवागमन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था**

30 परिवारों के लिए एक रास्ता जीवनरेखा के समान था। यह रास्ता लंबे समय से प्रचलन में था, लेकिन राजस्व रिकॉर्ड में कटान दर्ज नहीं होने के कारण ग्रामीणों को आवागमन में बाधों का सामना करना पड़ रहा था। कई बार प्रयासों के बावजूद समस्या का समाधान नहीं हो पा रहा था। शिविर के दौरान मूलचन्द पुत्र भूरागर, छोटे पुत्र धुकलराम सहित

भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। कई बार प्रयासों के बावजूद समस्या का समाधान नहीं हो पा रहा था। शिविर के दौरान मूलचन्द पुत्र भूरागर, छोटे पुत्र धुकलराम सहित

लगभग 20 ग्रामीणों ने अपनी समस्या शिविर प्रभारी के समक्ष रखी। हल्का पटवारी मूलचन्द जाट ने मौके पर ही निरीक्षण कर मात्र 15 मिनट में रास्ते का प्रस्ताव तैयार कर दिया। तहसीलदार धोद भरतदान द्वारा प्रस्ताव को तुरंत स्वीकार कर लिया गया। इस त्वरित कार्रवाई से ग्रामीणों के चेहरों पर खुशी साफ दिखाई दी। जिस समस्या ने वर्षों तक परेशान किया, उसका समाधान

एक ही शिविर में हो जाना सरकार की जन समस्या समाधान की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। ग्रामीणों ने इस सफल पहल के लिए मुख़्तमर भजनलाल शर्मा एवं क्षेत्रीय विधायक गोवर्धन वर्मा का आभार व्यक्त किया और आशा जताई कि भविष्य में भी ऐसे शिविर आयोजित होते रहेंगे, जिससे आमजन की समस्याओं का समाधान समयबद्ध और पारदर्शी तरीके से हो सके।



पंडित अनिल शर्मा

ग्रह स्थिति: सूर्य–धनु, चन्द्रमा–धनु, मंगल–धनु, बुध–वृश्चिक, गुरु–मिथुन, शुक्र–धनु, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह राशि में। आज से राष्ट्रीय पौष मास आरम्भ होगा। रज्जब मु.मास 7 आरम्भ होगा। श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:33 तक, शुभ 9:51 से 11:08 तक, चर 1:42 से 3:00 तक, लाभ–अमृत 3:00 से सूर्यास्त तक। राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:15, सूर्यास्त 5:34 तक

राशिफल

सोमवार 22 दिसम्बर, 2025

पौष मास, शुक्ल पक्ष, द्वितीया तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र मंगलवार प्रातः 5:32 तक, ध्रुव योग सायं 4:40 तक, कौलव करण दिन 10:52 तक, चन्द्रमा आश्रत प्रातः 11:07 से मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–धनु, चन्द्रमा–धनु, मंगल–धनु, बुध–वृश्चिक, गुरु–मिथुन, शुक्र–धनु, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह राशि में। आज से राष्ट्रीय पौष मास आरम्भ होगा। रज्जब मु.मास 7 आरम्भ होगा। श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:33 तक, शुभ 9:51 से 11:08 तक, चर 1:42 से 3:00 तक, लाभ–अमृत 3:00 से सूर्यास्त तक। राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:15, सूर्यास्त 5:34 तक

मेघ
अपने अति व्यावसायिक आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अतः हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बने लेंगें। आज धार्मिक–मांगलिक कार्य के लिए यात्रा संभव है।

तुला
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेंगी।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होगा। अतः हुए कार्य बने लेंगे। नवीन कार्य योजना के क्रियाव्यवण होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

वृश्चिक
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होगा। अतः हुए कार्य बने लेंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। आवश्यकताओं में विलम्ब हो सकता है। वाद–विवाद टालना ठीक रहेगा।

धनु
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होगा। अतः हुए कार्य बने लेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त–व्यस्त दिवचर्या में सुधार होगा।

मकर
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। आज आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बने लेंगे।

सिंह
घर–परिवार में अनावश्यक वाद–विवाद हो सकता है। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। खान–पान का ध्यान रखें। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कन्या
घर–परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। घर–परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मीन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बने लेंगे। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

